राष्ट्र प्रेम

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

जिस व्यक्ति में अपने राष्ट्र से प्रेम नहीं, वह पशु के समान है। इसीलिए कहा गया है–

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान हो,

वह नर नहीं पशु है निरा और मृतक समान है।

अर्थात जिस व्यक्ति को अपने देश के प्रति गौरव की भावना तथा अपने देश पर अभिमान न हो वह व्यक्ति केवल पशु है ओर उसकी आत्मा मृत व्यक्ति के समान है। राष्ट्र प्रेम सर्वोच्च गुण है। राष्ट्र के प्रति सम्मान की भावना होनी चाहिए। राष्ट्र की धरोहर को, राष्ट्रीय सम्पत्ति को, राष्ट्रीय आदर्शो को, राष्ट्रगान को और राष्ट्र झण्डे का सम्मान करना हमारा परम कर्तव्य है। भारत पर समय–समय पर अनेक आक्रान्तों ने शासन किया। इसके बावजूद भारतीय राष्ट्र की स्मिता नष्ट नहीं हुई। भक्तिकालीन कवियों ने राष्ट्र प्रेम और राष्ट्र भक्ति का जोश भारतियों में भरा। जिससे राष्ट्रीय स्मिता सुरक्षित रही। अंग्रेजों के दमन और हिंसात्मक प्रवृत्ति के बावजूद भी हमने अहिंसात्मक प्रतिरोध किया। अनेक राष्ट्र भक्तों ने जान की परवाह किये बिना अंग्रेजों से लोहा लिया और एक दिन ऐसा आया जब अंग्रेजों को भारत छोड़कर जाना पड़ा। भारत स्वतंत्र हुआ। भारत का संविधान बना। सामाजिक न्याय और समरसता की भावना यहां के लोगों में भर दी गयी। इसका परिणाम यह रहा कि राष्ट्र प्रेम की भावना बढ़ती रही। भारत में प्रजातंत्र है। प्रजातंत्रात्मक शासन पद्धति प्रजा के द्वारा प्रजा के लिए और प्रजा को समर्पित है। जैसे व्यक्ति का या वस्तु का अपना–अपना धर्म है, वैसे राष्ट्र का भी अपना धर्म है। राष्ट्र धर्म व्यक्तिगत धर्म से ऊपर है। यदि राष्ट्र सुरक्षित रहेगा तभी व्यक्ति सुरक्षित रह सकता है। भारत एक धर्म प्रधान देश है। धर्म प्रधान होने से मानस की शुद्धि होती है। प्रमुख धर्म है अहिंसा। भारत अहिंसा प्रधान देश है। अहिंसा परमोधर्मः अर्थात् अहिंसा ही प्रधान धर्म है। अहिंसा का पालन करना मानव का कर्त्तव्य है। राष्ट्रधर्म की रक्षा करना सभी भारत वासियों का कर्त्तव्य है।

सैनिक अर्धसैनिक बल और प्रान्तिय पुलिस के जवान प्राणों की परवाह न करके देश की रक्षा करने में लगे रहते हैं। उनके लिए राष्ट्र धर्म सर्वोपरि है। सीमाओं की सुरक्षा में दिन–रात वे लगे रहते है। उनका ध्यान सदैव इस पर लगा रहता है कि कोई भी बाहरी देश का नागरिक या आतंकवादी हमारे देश की सीमा में न आवें। अपने इस कर्त्तव्य का पालन करते हुए वे सदैव सजग रहते हैं। देश के महापुरुषों का भी यह कर्त्तव्य है कि राष्ट्र धर्म का पालन करते हुए देश में शांति और सुव्यवस्था बनाये रखने के लिए सदुपदेश के माध्यम से लोगों को सजग करें। भारत विभिन्नताओं का देश है। यहां पर सभी धर्मों और सम्प्रदायों के लोग अपनी–अपनी मान्यता के अनुसार धर्म का पालन करते हुए राष्ट्रधर्म को सर्वोपरि मानते हैं। राष्ट्रहित की भावना यहां कण–कण में समाहित है। जगत् कल्याण की भावना एक बहुत ही अच्छी भावना है। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना इससे जुड़ी हुई है। मानव जीवन बहुत ही बहुमूल्य है। संसार में जितने ही प्राणी हैं उसमें मानव ही सर्वश्रेष्ठ है। अतः संसार के हितचिंतन की बात सोचना सबसे अधिक मानव का उत्तरदायित्व है। मानव ही संसार को स्वर्ग बना सकता है और अपने बुरे कामों से इसको नरक भी बना सकता है। यह मानव तन ईश्वर सत्संग के लिए प्राप्त हुआ है। ईश्वर में आस्था रखना, पुरुषार्थ चतुष्ट्य का पालन करना, धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष के अनुसार जीवन व्यतीत करना, अहिंसा का आचरण करना, और बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय की कामना करना, मानव जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।

मानव को जीवन में प्रमाद नहीं करना चाहिए। जीवन में निवृत्ति और प्रवृत्ति दो मार्ग हैं। सांसारिक विषय भोगों से बचना ही निवृत्ति है। भारतीय संस्कृति में कहा गया है कि सबको अपना जीवन प्रिय है। अतः न किसी को मारें, न किसी पर शासन करें, न किसी को दास बनाएं, न किसी को परिताप दें और न किसी का प्राण वियोजन करें। प्राचीनकाल में इसका जो महत्त्व था आज उससे कहीं अधिक महत्त्व है, क्योंकि उस समय हिंसा के साधन उतने व्यापक नहीं थे, किन्तु आज के युग में परमाणविक अस्त्र–शस्त्रों का प्रयोग मानव–संस्कृति के सारे विकास को पलक झपकते ही नष्ट कर सकता है। शोषण मुक्त समाज के निर्माण के लिए अपरिग्रह सिद्धान्त का आचरण आवश्यक है। अतः व्यक्ति के जीवन दर्शन में अहिंसा का प्रमुखतम स्थान है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने जीवन में अहिंसा का पालन किया।

अहिंसा उनके लिए जीवन का आधार थी। अहिंसा के बल पर उन्होंने अंग्रेजी शासन से भारत को मुक्त करा लिया। उनका विश्वास था कि जब तक समाज का अंतिम व्यक्ति विकास की मुख्यधारा से नहीं जुड़ता, तब तक सम्यक् विकास नहीं हो सकता। उन्होंने छुआछूत, गरीबी, ऊँच–नीच आदि को दूर करने के लिए जीवन भर प्रयास किया। महात्मा गांधी ने जगत् कल्याण के लिए सर्वोदय, ट्रस्टीशिप, सत्याग्रह, उपवास और सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया। यही राष्ट्र प्रेम यहां के सभी निवासियों में किसी न किसी रूप में व्यक्त होता है। राष्ट्र प्रेम सर्वोत्तम गुण है।